नबियों का तरीक़-ए-दावत

लेखक–
अल्लामा सय्यद सुलेमान नदवी

अनुवाद – डॉ. रफ़ीक़ अहमद

किताब का नाम : नबियों का तरीक़–ए–दावत

लेखक : अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी

अनुवाद : डा० रफ़ीक़ अहमद
M.: 9451767474

हिन्दी एडीशन : 2022

प्रतियाँ : 1000

पृष्ठ : 26

प्रिन्टर्स : रहमान प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
आबूनगर–फ़तेहपुर

प्रकाशक

अल्फाबेट पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

इलाहाबाद

●

मिलने का पता :

असद बुक डिपो

11-C, **याकूतगंज, नखासकोना-इलाहाबाद**

Mob. : 9307408918

इस्लाम एक पैग़ामे इलाही है और इस पैगाम की हामिल उम्मते मुसलमा है, यह वह हक़ीक़त है जिस की तरफ़ से न सिर्फ आम मुसलमानों ने बल्कि उल्मा और सूफियों तक ने लापरवाही और गफ़लत बरती है, और इस हक़ीक़त को बिल्कुल भुला दिया है। इसी का नतीजा है कि मुसलमान अपने को उन्हीं अर्थों में क़ौम समझने लगे, जिन अर्थों में दुनिया की दूसरी क़ौमें अपने आपको क़ौम समझती हैं। उनमें से कोई वतनपरस्ती के सहारे अपनी क़ौमियत की दीवार खड़ी करता है, किसी ने नस्ल को क़ौमियत का मेयार समझा और उनमें से जो लोग कुछ समझ रखते हैं, वह ज़्यादा से ज़्यादा समझते हैं कि मुसलमान क़ौम क़ौमियत और नस्ल से नहीं, बल्कि मज़हब की बुनियाद पर क़ौम है । हालाँकि हक़ीक़त उससे भी बहुत आगे है और वह यह है कि मुसलमान वह जमाअत हैं, जो अल्लाह की तरफ से एक खास पैग़ाम लेकर दुनिया में आई है। इस पैग़ाम को क़ायम रखना, उसको फैलाना और उसकी तरफ लोगों को दावत देना उसकी ज़िन्दगी का वाहिद फरीज़ा है। इस पैग़ाम के मानने वालों की एक ब्रादरी है जिसके कुछ अधिकार हैं और यही उनकी क़ौमियत है।

इस हक़ीक़त के स्पष्ट और ज़ाहिर होने के बाद मुसलमान क़ौम को सबसे बड़ा फ़र्ज़ इस पैग़ामे इलाही की इल्म, उसकी बजा आवरी, उसकी तालीम, उसकी दावत, उसका प्रचार-प्रसार और और उसके हल्के बगोशों की एक पूरी ब्रादरी का क़ियाम और उसके हुक़ूक़ को बजा लाना है।

लेकिन अफसोस है कि मुसलमानों ने अपने इस फर्ज़ को भुला दिया। हमारे सुल्तानों और बादशाहों ने इक्तिदार और हुकूमत पर मुत्मइन हो गये ऐश व आराम और ज़मीन व जायदाद की दौलत को अपनी ज़िन्दगी का हासिल क़रार दिया। उल्मा ने पढ़ने पढ़ाने और फितनों से बचकर ज़िन्दगी गुज़ारने को काफी समझना। सन्तों और सूफियों ने तसबीह व सज्जादा की नुमाइश पर बस किया और ज़िन्दगी के कारोबार से अपने आपको अलग कर लिया। नतीजा यह है कि उम्मत रहबरी और रहनुमाई के बग़ैर अपने वर्तमान और भविष्य से ग़ाफिल हो कर रह गई, और उम्मते मुस्लिमा की ज़िन्दगी का मकसद उसके सारे तबक़ों की निगाहों से ओझल हो गया।

उम्मते मुस्लिमा का फ़रीज़ा

क़ुरआन पाक और प्रभावित हदीसों से यह साबित है कि उम्मते मुस्लिमा अपने नबी की तबीयत में सारी क़ौमों की तरफ भेजी गयी है। इस उम्मत को बाहर लाया ही इसलिये गया है कि वह दावत व तबलीग़, नेकी का हुक्म देने और बुराई से रोकने के फ़रीज़े को अन्जाम दे, जैसा कि सूरह आले इमरान में अल्फ़ाज़ में इर्शाद होता हैः

> ''तुम (ऐ मुसलमानो!) बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिये ज़ाहिर की किये गये हो तुम अच्छे काम का हुक्म देते हो और बुरे कामों से रोकते हो''
>
> (आले इमरान 3:110)

इस आयत ने बताया कि उम्मते मुस्लिमा दूसरी उम्मतों के लिये बाहर लाई गई है। उसकी पैदाइश की ग़र्ज़ भी यही है कि वह सारी इन्सानियत की खिदमत करे और उनमें खैर व भलाई की दावत को आम करे और बुराई से रोके। ऐसी हालत में अगर यह उम्मत अपने इस फ़र्ज़ से ग़ाफिल हो जाये तो वह अपनी ज़िन्दगी के मक़सद को पूरा करने से आरी है। इस आयत से चन्द आयतें। पहले यह व्याख्या है कि हर ज़माने में उम्मते मुस्लिमा पर यह फ़र्ज़े किफाया है कि उसकी कुछ जमाअतें इसी काम में लगी रहे, अगर इस काम से मुसलमानों की सारी जमाअतों ने गफ़लत बरती तो सारी उम्मत गुनहगार ठहरेगी, और अगर कुछ जमाअतों ने इस फ़र्ज़ को अंजाम दिया तो यह फ़र्ज़ पूरी उम्मत की तरफ से अदा हो जाएगा। इरशाद हैः

> ''और ज़रूरी है कि तुम में एक ऐसी जमाअत मौजूद रहे जो लोगों को नेकी की दावत और अच्छे कामों की तालीम देती रहे और बुरी बातों से रोकती रहे और यही वह लोग हैं जो फ़लाह पाने वाले हैं''
>
> (आले इमरान ३:१०४)

पूरी उम्मत की इस्लाह व फलाह और दवा व मालजा के लिये यही जमाअत ज़िम्मेदार ठहराई गई है, इसके तीन फ़र्ज़ करार दिये गयेः

- ★ सारी इन्सानियत को खैर व भलाई की दावत
- ★ अच्छाई को फैलाना
- ★ बुराई से रोकना

जब तक और जिस अनुपात में उम्मत के अन्दर इस

जमाअत के अफराद मौजूद रहे। यह फ़रीज़ा पूरा होता रहा और हदीस ख़ैर लकुरून के मुताबिक़ जमाअत सहाबा रज़ि० जमाआत ताबिईन, जमाअत तबा ताबिईन के बाद यह जमाआत घट कर और बिखर कर सिर्फ लोग रह गये।

दौलत व सल्तनत मक़सूदे अव्वल नहीं

इस राह में सबसे बड़ी ज़लालत और गुमराही दौलत व सल्तनत को मक़सूद समझ लेने से आई, और हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फरमायाः

> ''मुझे तुम्हारे मामले में फिक्र व गुरबत से ज़्यादा डर नहीं है, बल्कि मैं इससे डरता हूँ कि तुम पर दुनिया की नेमतें पिछली क़ौमों की तरह कुशादा कर दी जाऐं''।
>
> (मुत्तफ़िक़ अलैह)

अल्लाह के रसूल का यह अन्देशा बिल्कुल सही निकला, दुनिया ने जब अपनी व्यापकताओं, विलासताओं और दौलत मन्दियों के साथ मुसलमानों पर साया डाला तो वह सिर्फ इक्तिदार व हुकूमत और माल व दौलत को उम्मते मुस्लिमां की ज़िन्दगी का हासिल समझ लिया। और दौलते इस्लाम के बजाए मुसलमानों की सल्तनत पर मुत्मइन हो गये। यानी ऐसी सल्तनत को अपना मक़सद समझ बैठे जिसका हाकिम कोई मुसलमान हो, हालाँकि मक़सद यह था कि इस्लामी शरीअत और इस्लामी अदल व इन्साफ की हुकूमत क़ायम की जाए, और यह सल्तनत व हुकूमत इस निज़ामे अदल के क़ियाम का सबसे बड़ा और सबसे ताक़तवर ज़रिया हो जैसा कि इस आयत का मन्शा हैः

''वह लोग जिनको हम ज़मीन में ताक़त बख्शें तो नमाज़ खड़ी करें, ज़कात दें, अच्छी बात का हुक्म करें, बुरी बात से रोकें और तमाम कामों का नतीजा अल्लाह ही के हाथ में है।''

(अलहज २२:४१)

उम्मते मुस्लिमा नबी सल्ल0 की जानशीन है:

उम्मते मुस्लिमा-फराएज़ नबूवत में से खैर व भलाई की दावत और नेकी का हुक्म और बुराई से मनाही में नबी सल्ल० की जानशीन हैं इसलिये रसूल करीम सल्ल० को कारे नबूवत के जो तीन फ़र्ज़ अता हुए हैं।

★ तिलावते एहकाम
★ तालीम किताब व हिकमत
★ तज़किया

यह तीनों फ़र्ज़ उम्मते मुस्लिमा पर भी बतौर किफ़ाया आएद हैं। चुनाँचे हर ज़माने के विख्यात ओलमायें उम्मत ने इन तीनों फ़रीज़ों की अदाएगी की तरफ तवज्जो दिलाई है, और उन्हीं की कोशिशों का नूर है, जिससे काशानाए इस्लामी दुनिया में रोशनी मौजूद है।

''वह उन्हीं में से एक रसूल है जो उन्हें अल्लाह की आयतें का पढ़कर सुनाता, उनको पाक व साफ करता और किताब व हिकमत की उन्हें तालीम देता है।''

(अल जुमा ६२:२)

तालीम और तज़किया की यक जाईः

रसूल करीम सल्ल० ने इन तीनों फ़राएज़ को बहुत ही खूबसूरती के साथ अन्जाम दिया। लोगों को अहकामे इलाही और आयाते कुरआनी पढ़कर सुनाई और उनको किताबे इलाही और हिकमते रब्बानी की बातें सिखाईं और उसी पर बस न किया, बल्कि अपने फ़ैज़े सोहबत, तासीर और तरीक़े तदबीर से पाक व साफ भी किया। इन्सानी नफूस का तज़किया फरमाया, दिलों की बीमारियों का इलाज किया, बुराइयों और बदियों के गन्दगी और मैल दूर करके अखलाक़े इन्सानी को निखारा और संवारा। यह दोनों बाहरी और अन्दरूनी काम बराबर से अदा होते रहे चुनाँचे सहाबा रज़ि० और उनके बाद ताबिईन और फिर तबा ताबिईन के तीन ज़मानों तक यह दोनो ज़ाहिरी व बातनी काम इसी तरह रहे, जो उस्ताद थे वही शेख थे और जो शेख थे वही उस्ताद थे। जो लोगों को तालीम देते थे, वह तन्हाई की रातों में और अपने साथियों के तज़किया व तसफिया (आत्म शुद्धि) के भी ज़िम्मेदार थे, और इन तीनों तबक़ों में उस्ताद और शेख का फर्क नज़र नहीं आता।

तालीम और तज़किया में फर्क

इसके बाद वह दौर आना शुरू हुआ जिसमें मसनदे ज़ाहिर में दर्स देने वाले, बातिन के और बातिन के रोशन दिल, ज़ाहिर से खाली होने लगे और ज़माने के साथ-साथ ज़ाहिर व बातिन की यह दूरी बढ़ती गई, यहाँ तक कि उलूम ज़ाहिर के लिये मदरसों की चहार दिवारी और तालीम व तज़किया बातिन के लिये खानकाहों

और रिवातों की तामीर अमल में आई और वह मस्जिदे नबवी सल्ल० जिसमें यह दोंनो जलवे यकजा थे। इसकी रोशनी मदरसों और खानकाहों में तक़सीम हो गईं, जिसका नतीजा यह हुआ कि मदारिस से उल्माए दीन की जगह उल्माए दुनिया निकलने लगे, और बातिन के दावेदार इल्मे शरीअत के राज़ों व कमालात से नावाकिफ हो कर रह गये।

कामयाबी दोनों के संयोग में है:

फिर भी इस दौर के बाद भी ऐसी कुछ हस्तियाँ पैदा होती रहीं, जिन में नूरे नबूवत के रंग भरे, और ग़ौर से देखिये तो मालूम होगा कि इस्लाम में जिन बुर्जुगों से फ़ायदा पहुँचा और फैला वह वही थे जो इन दोनों खूबियों के जामे थे। इमाम ग़ज़ाली रज़ि० जिनसे उलूम माकूल व मन्कूल ने जलवा पाया। इल्मे हक़ीक़त ने भी उन्हीं के ज़रिये ज़हूर पाया। हज़रत शेखे अबुल नजीब सुहरवर्दी रज़ि० एक तरफ शेखे तरीक़त हैं तो दूसरी तरफ मदरसा निज़ामिया के उस्ताद हज़रत शेख अब्दुलक़ादिर जीलानी इमामे वक्त और शेखे तरीक़त दोनों हैं, यहाँ तक कि वह लोग जिनको उलमाए ज़ाहिर समझा जाता है जैसे हज़रात मुहद्दिस्सीन इमाम बुखारी रज़ि०, इमाम इब्ने हम्बल, सुफ़ियान सूरी रज़ि० वग़ैरह वह भी इस जामिइयत से सरफराज़ थे। दरम्यानी दौर में अल्लामा इब्न तैमिआ और हाफिज़ इब्ने क़य्यिम रह० को कुछ नावाक़िफ लोग बातिन से खाली समझते हैं, हालाँकि इन के हालात और ज़िन्दगियां इन बरकाते बातनी से लबरेज़ है। इब्ने क़य्यिम रज़ि० की ''मनाज़िल अलसालकीन'' वग़ैरह किताबें पढ़िए तो अन्दाज़ा

होगा कि वह आराइश ज़ाहिर व जमाल बातिन दोनों से आरास्ता थे।

हिन्दुस्तान में जिन बुर्जुगों के दम क़दम से इस्लाम की रौशनी फैली वह हक़ीक़त में वही थे, जिनकी ज़ात में मदरसा और खानक़ाह के कमालात की जामिअत थी कि वह नबवी तरीके ज़िन्दगी से क़रीब तर थे, इसलिये उनका फ़ैज दूर-दूर तक फैलता चला गया। आसमाने दिल्ली के चाँद व सूरज और तारे शाह अब्दुर्रहीम साहब रहमतुल्लाह अलैह से लेकर शाह इसमाइल रज़ि० तक को आप एक एक करके देखें तो आपको ज़ाहिर व बातिन उलूम की एक जाई का नज़ारा होगा और उससे उनके इल्मी व रूहानी बरकात की व्यापकता की हक़ीक़त स्पष्ट हो जाएगी, वह इल्मे दीन की तालीम देते वक्त ''युअल्लिमुहुमलकिताबा वलहिकमता'' का जलवा दिखाते थे और हुजरों में बैठ कर ''युज़क्कीहिम'' की जलवा रेज़ी फरमाते थे।

फिर उनके बाद उनके फुयूज़ व बरकात के जो हामिल हुए जिन की निशान देही हर्गिज़ ज़रूरी नहीं कि (सजदों के असर से उनके चेहरों पर निशानियाँ मौजूद हैं) उनसे दुनिया को जो फैज़ पहुँचा और दीन की दावत व तबलीग़ और क़ुलूब व नफ़ूस के तज़किया व तसफ़िया का जो काम अन्जाम पाया, वह भी ज़ाहिर व बातिन की इसी जामिइयत (संयोग) के आइनादार थे, और आइन्दा भी सुन्नते इलाहिया के मुताबिक़, दीन का फैज़ जिनसे फेलेगा वह वही होंगे जिनके मदरसियत और खानक़ाहियत की दो सौ तें एक चश्मा बन कर बहेंगी ''मरजल बहरैन यलतकियान'', आँखों का नूर रात की बेदारी से बढ़ता और ज़बान की तासीर

ज़िक्र की कसरत से फैलती है। रात के इबादत गुज़ार ही इस्लाम में दिन के सिपाही साबित होते हैं। वाकियात और हादसात का चौदह साला दफ्तर इस दावे का शाहिद है। ज़बान की तेज़ी और क़लम की रवानी दिल की रोशनी के बग़ैर रेत की चमक से ज़्यादा कुछ नहीं। चाहे वह उस वक्त कितना ही चमकदार नज़र आता हो, मगर वह अपने वजूद से महरूम है।

मिज़ाजे नबूवत मिल्लत की बुनियाद है

इसकी एक खास वजह है और वह यह है कि हर क़ौम और मिल्लत का एक मिज़ाज होता है, जब तक निगाहों के सामने इसलाह व तजदीद का काम क़ौम व मिल्लत के मिज़ाज के मुताबिक न होगा, उसको कामयाबी व सरफराज़ी हासिल न होगी, इस वक्त ज्यादतर जमाअतें मिल्लते इस्लामिया की इसलाह व तजदीद की दावेदार हैं।

एक जमाआत ने तो इसी की ज़रूरत समझी कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्ल० की नबूवत और रिसालत का ज़माना पुराना हो चुका अब एक नई नबूवत और रिसालत की ज़रूरत है चुनाँचे उसने इसकी दावत दी और नाकाम रहा और मिल्लते मोहम्मदिया से उनका रिश्ता कट गया।

दूसरे गिरोह ने नबूवत व रिसालते मोहम्मदी को तो क़ायम रखा मगर वहीये मोहम्मदी की ताबीर में कांट-छांट व तब्दीली की ज़रूरत समझी, हदीसे नबवी सल्ल० से इन्कार किया। कुरान पाक की ताबीर के लिये अपने अक़्ली कियासात और मौजूदा ज़माने के असरात को मेयार और बुनियादी आमिल क़रार दिया। यह

गिरोह गोया एक नए क़ुरआन का तालिब है। इस जमाअत का रिश्ता भी मिल्लत मोहम्मदिया सल्ल० से कमज़ोर पड़ गया और अब उनका हर मुजतहिद हसबुना किताबुल्लाह'' कह कर किताबुल्लाह की नई ताबीर करता और नई नमाज़, नया रोज़ा, नया तरीके हज और नई शरीअत निकाल रहा है।

तीसरी जमाआत किताबुल्लाह और हदीसे रसूल सल्ल० को याद करती है, मगर हर आयत व हदीस को अपनी अक़्लियत के मेआर पर जाँचना चाहती है और इसी लिये मोजज़ात की मुन्किर, जन्नत व दोज़ख की हक़ीक़त के इन्कारी, सूद के जवाज़ के क़ायल और बहुत से इन मसाएल का जिनका ज़िन्दगी से ताल्लुक है, दीन व शरीअत के बजाए ''अक़्ल'' और ''उसूले फितरत'' से तय करना चाहती है। नतीजा यह हुआ कि उनका शुमार दीने मोहम्मदी सल्ल० के मौवल्लीन में हुआ मोमिनीन व क़ानेतीन में नहीं हो सका।

एक नया गिरोह है जो नई नबुवत नहीं चाहता, नया कुरान नहीं माँगता, नई नमाज़ और नए रोज़े का मुबल्लिग़ नहीं लेकिन वह एक नई इमामत का तलबगार है, जो इस्लाम का नया निज़ाम मुरत्तब करे, कुफ़्र व ईमान और निफाक़ के नए नक्शे भरे और योरप की इज़्म वाली तहरीकों की तरह मुसलमानों में एक नई तहरीक का आगाज़ कर और इस ''इस्लाम इज़्म'' को इसी अज़्म वाले अज़्म और जोश व खरोश से नौजवानों में फैलाए और कलामी व क़ानूनी मसाएल का फैसला एक नए मुजतहदाना अन्दाज़ से करे। मुमकिन है कि यह गिरोह इस मौजूदा इन्क़लाबी दौर में जवानों के लिये तसल्ली व तशफ्फी का पैग़ाम साबित हो,

और आर्थिक व सियासी राह से बेदीनी का जो सैलाब आ रहा है, उसके रोकने का काम करे, लेकिन उसका तरीक़े फिक्र और तरीक़ेकार उम्मत के तमाम तबक़ात के मुताबिक़ नही।

हासिल यह है कि उम्मते मोहम्मदिया के मिज़ाज के मुताबिक यह ज़रूरी है कि दाइ, दावत अैर तरीक़े दावत तीनों चीज़ें ठीक ठीक तरीक़े नबूवत और नमूनये नबूवत के मुताबिक़ हों, दाइ खुद भी दिली और कल्बन दाइ अव्वल मोहम्मद रसूल सल्ल० से निसबत रखता हो, जिस हद तक यह निसबत मज़बूत होगी, दावत में तासीर और कशिश ज़्यादा होगी। फिर यह भी ज़रूरी है कि दावत वही हो, यानी खालिस इस्लाम, ईमान और अमल की दावत हो। फिर दावत का तरीक़ा भी वही इख्तियार किया जाए, जो दाइये इस्लाम अलै० ने फरमाया था। जिस हद तक इन तीनों मामलों में अहदे रिसालत व नबूवत के साथ कुरबत व मुनासबत होगी उतनी ही ज़्यादा दावत की क़ूव्वत में तासीर और दावत के दायरे में वुसअत पैदा होगी और राह की गुमरही से हिफाज़त और सिराते मुसतक़ीम की तरफ रहबरी की ताक़त में इज़ाफा होगा। पिछली सदियों के जिन दाइयान उम्मत के तजदीदी कामों को उम्मत ने तसलीम किया है, उनकी तारीख से भी, इन उसूलों की सच्चाई साबित होती है।

अलग़र्ज़ ज़रूरत यह है कि दाइ (आमंत्रक) अपने इल्म व अमल, फिक्र, व नज़र, तरीक़े दावत और मिज़ाज व तर्बियत में अम्बिया अलैहसलाम और खुसूसन मोहम्मदुर्रसूल सल्ल० से एक मुनासबत रखता हो। सेहत ईमान और ज़ाहिरी अमल के साथ उसके बातिनी कैफियत भी तरीकये नबूवत पर हों। मोहब्बते

इलाही, खशियते इलाही, एखलाकु अल्लाह, ताल्लक मय अल्लाह की कैफियत हो। अखलाक, आदात व शमाएल में सुन्नते नबवी की पैरवी और कैफ़ियत हो। हुब्बुल्लाह, बुग्ज़ुल्लाह, तमाम मुसलमानों के साथ शफ़क़त व रहमत और आम इन्सानों के साथ शफक़त व मेहरबानी उसकी दावत का हो और अम्बिया अलैह० के बार बार दोहराए हुए उसूल के मुताबिक़ सिवाए अज़्रे इलाही की तलब के कोई और मक़सद न हो, और उसमें तलब की ऐसी धुन हो कि शान व मनसब, माल व दौलत, इज़्ज़त व शोहरत, नाम व नमूद और ज़ाती ऐश व इशरत का कोई ख्याल राह में रोड़ा न हो उसका बैठना, उठना, बोलना, चलना, ग़र्ज़ उसकी ज़िन्दगी की हर जुम्बिश व हरकत उसी एक दिशा में सिमट कर रह जाए।

> ''बेशक मेरी नमाज़, मेरी सारी इबादतें, मेरा जीना और मेरा मरना सब कुछ अल्लाह रब्बुलआलिमीन के लिये है जो सारे जहानों का पालनहार है''
>
> (अल इनाम ६ : १६३)

नाकामी के असबाब

१६२१ ई० की बात है कि हिन्दुस्तान में आर्यों की कोशिश से जाहिल नोमुस्लिम देहाती इलाक़ों में बेदीनी की आग फैली। इस आग को बुझाने के लिये चारों तरफ मुसलमान खड़े हुये। बहुत सी तबलीग़ी अन्जुमनें बनीं, हज़ारों रूपये के चन्दे हुये मुब्लिग़ीन नौकर रख कर जगह जगह फैलाए गये। मुनाज़रीन इस्लाम ने बहस व मुनाज़रा के मैदान गरम किये और कई साल तक बड़े धूम

धाम से यह काम होता रहा। आखिरकार धीरे-धीरे जोश व खरोश कम होता गया। एक एक करके अन्जुमनें टूट गईं। चन्दों की कमी से तबलीग़ करने वाले हटते गये। मुनाज़िरीन के बुलावे भी कम होने लगे और आखिरकार समन्दर मे बिल्कुल सुकून पैदा हो गया।

इस नाकामी की वजेह क्या थी? यह सारा तमाशा काम करने वालों की दिली लगन का नतीजा न था, और न मुब्लिग़ीन, (धर्म प्रचारकों) मुनाज़रीन और दाआयाने इस्लाम (आमंत्रकों) के दिलों में दीन की धुन थी, बल्कि जो कुछ था वह एक दूसरे को दाद देना और जल्द मिलने वाल फायदे की हिर्स व लालच थी, और यह ज़ाहिर हे कि दीनी दावत और बातिनी हिदायत व तबलीग़, बाज़ार की क़ीमत से खरीदी नहीं जाती।

अम्बिया के उसूले दावत :

उसूले हयात और पैग़ामे ज़िन्दगी की तबलीग़ व इशाअत के बहुत से तरीके हैं जो दावत और दायी के मिज़ाज व तौर-तरीकों के एतबार से पहचाने जाते हैं। अम्बिया अलैह० के दावती तरीकेकार दूसरे तमाम दाइयों से बिल्कुल अलग हैं। संक्षेप में हम यह बताने की कोशिश करेंगे कि अम्बिया के दावती उसूल व तरीकेकार क्या हैं।

(1) बेग़र्ज़ी :

अम्बिया अलैह० के उसूले दावत की बुनियादी चीज़ें यही है कि वह अपने काम का मेहनताना व मज़दूरी किसी इन्सान से नहीं चाहते :

उनका मुतहदा व मुतफ़क्का फैसला है। इन्तेहा यह है कि वह अपने काम की किसी बन्दे से तहसीन व आफरीन भी नहीं चाहते। उनकी दावत की कशिश और तासीर दो कूव्वतों का नतीजा होती है।

★ मखलूक़ के हर अज्र से बेफिक्री और बेनियाज़ी

★ उनकी ज़ाती पाकीज़गी व साफ सुथरी ज़िन्दगी

★ सूरह यासीन में कुछ दाइयाने हक़ का ज़िक्र है जिसमें एक को झुठलाने के बाद दूसरे रसूल की आमद और उसकी ताईद का बयान है। आखिर में अकसाए शहर से एक पाक हस्ती आती है और अपने हम क़ौमों से खिताब करके कहती है

> ''ऐ मेरी क़ौम के लोगों इन पैग़म्बरों की पैरवी करो, उनकी पैरवी करो जो तुमसे मज़दूरी नहीं चाहते और वह हिदायत पाये हुए हैं।
>
> (यासीन ३६ : २०: २१)

इस आयत से मालूम हुआ कि मुबल्लिग़ (प्रचारक) के लिये पाकीज़गी और अज्र से बेनियाज़ी और इखलास और अल्लाह से ताल्लुक उनकी तासीर का अस्ल सरचश्मा है।

(2) जज़्बाये खैर ख्वाही :

उनकी तबलीग़ व दावत का दूसरा प्रेरक बन्दगाने खुदा पर रहमत व शफकत और खैर ख्वाही का जज़्बा है। बन्दों की इस बुरी हालत को देखकर उनका दिल कुढ़ता है, और खैर ख्वाही से उनका दिल चाहता है कि किसी तरह उनकी हालत सुधर जाए ठीक उसी तरह जिस तरह बाप, बेटे की इस्लाह और सुधार और हिदायत का तालिब केवल शफकत और खैर ख्वाही की बिना पर

होता है। इसी तरह प्रचारक और आमंत्रक के अन्दर भी यही जज़्बा हो। दीनी खैर ख्वाही और मुसलमानों पर रहमत व शफ़कत की तासीर उसके दिल को बेचैन रखे। हज़रत हूद अलैह० अपनी उम्मत को खिताब करते हुए कहते हैं।

> ''ऐ मेरी कौम के लोगों! मैं बेवकूफ नहीं बल्कि मैं तो परवरदिगारे आलम का भेजा हुआ हूँ, मैं तुमको अपने परवरदिगार का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा निहायत मुख्लिस और दयानतदार और खैर ख्वाह हूँ।
>
> (अल ऐराफ ७ : ६७-६८)

हज़रत सालेह अलैह० अपनी उम्मत को ख़िताब करके फरमाते हैं:

> ''ऐ मेरी क़ौम के लोगों! मैं तुमको अपने परवरदिगार का पैग़ाम पहुँचा दिया और मैंने तुम्हारी खैर ख्वाही की लेकिन तुम अपने खैर ख्वाहों को नहीं चाहते।''
>
> (अल ऐराफ ७: ७९)

हज़रत नूह अलैह० पर उनकी क़ौम गुमराही का आरोप लगाती है, वह इसके जवाब में फरमाते हैं:

> ''ऐ मेरी क़ौम के लोगों! मैं बहका हुआ नहीं हूँ, बल्कि परवरदिगारे आलम का भेजा हुआ हूँ, तुम्हें अपने परवरदिगार का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारा भला चाहता हूँ''।
>
> (अल ऐराफ ७ : ६१-६२)

हज़रत मोहम्मद सल्ल० के तबलीग़ी हालात व कैफियात

का ज़िक्र कुरआन पाक में बार बार आया है और हर बार यह ज़ाहिर होता है कि हुज़ूरे अकरम सल्ल० को उम्मत का कितना ग़म है, ऐसा ग़म जिसके बोझ से पुश्त मुबारक टूटी जा रही थी।

''क्या हमने तुम्हारा सीना नहीं खोल दिया ओर तुमसे वह बोझ नहीं उतार लिया जो तुम्हारी पीठ तोड़ दे रहा था''।

(अलम नशराह ६४ : १–३)

अल्लाह के रसूल सल्ल० की उम्मत के ग़म से यह हालत थी कि हुज़ूर सल्ल० की ज़िन्दगी दूभर हो गई थी। अल्लाह ताअला ने तसल्ली दी और फ़रमायाः

''क्या इस बात पर आप अपनी जान हलाक कर देंगे कि यह ईमान नहीं लाते''।

(अश शुअरा आयत : ३)

यही मफ़हूम सूरह कहफ़ की एक आयत में इस तरह बयान हुआ हैः

''तो क्या आप उनके पीछे अगर वह कुरआन पर ईमान न लाऐं तो हसरत व अफसोस से अपनी जान घोंट देंगे।'' (अल कहफ :६)

इसी मोहब्बत व रहमत का तक़ाज़ा था कि हुज़ूर अनवर सल्ल० पर मुसलमानों की हर तकलीफ़ शाक़ गुज़रती थी और चाहते थे कि हर भलाई और खैर का दरवाज़ा उनपर खुल जाए, इरशाद हुआः

''तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आया जिस पर तुम्हारा तकलीफ में पड़ना शाक गुज़रता है तुम्हारी

भलाई का वह हरीस है और ईमान वालों पर शफीक व मेहरबान है।'' (तौबा : १२८)

(3) तबलीग़ व दावत में नर्मी :

दावत व तबलीग़ का तीसरा उसूल यह है कि नर्मी, सहूलत, आसानी, समझदारी और ऐसे ढंग से गुफ्तगु की जाए कि जिस से मुखातब पर दाई (आमंत्रक) के खुलूस व मोहब्बत और शफक़त का असर पड़े और बात मुखातब के दिल में उतर जाए। फ़िरऔन जैसे खुदाई के दावेदार काफिर के पास हज़रत मूसा अलैह० जैसे अज़ीम नबी भेजे जाते हैं, तो उनसे कहा जाता है:

''तुम दोनों (हज़रत मूसा व हारून) फ़िरऔन से नर्म गुफ्तगू करना।''

(ताहा २० : ४४)

मुनाफिकीन (कपटीचारियों) ने इस्लाम को नुकसान पहुंचाना चाहा और जिस तरह इस्लाम की दावत और मोहम्मद सल्ल० की रिसालत को नाकाम करना चाहा वह बिल्कुल ज़ाहिर है। साफ अल्फ़ाज़ में आप को यही हुक्म दिया जाता है :

''तो आप उनसे दर गुज़र कीजिये उनको नसीहत कीजिये और उनसे उनके मामले में ऐसी बात कीजिये जो उनके दिल में उतर जाए।''

(अल निसा :६३)

इससे अन्दाज़ा होता है कि जब इस नर्मी, सहूलत और दिल में उतर जाने वाली बातों का तरीक़ मुनाफिकों से बरतने का हुक्म होता है तो आम नादान मुसलमानों को समझाने और बताने का कैसा तरीक़ा होना चाहिये। इसी लिये अल्लाह ताअला ने दावत

के इस उसूल का तफ़सील के साथ ज़ाहिर फरमा दिया है, इरशाद होता हैः

> ''आप अपने परवरदिगार की तरफ लोगों को हिकमत मन्दी और अच्छी नसीहत के ज़रिये से दावत दें और बहस व मुबाहसा करें तो वह भी खूबी के साथ।''
>
> (अल नहल १६ :१२५)

हज़रत मोहम्मद सल्ल० ने दो सहाबियों को इस्लाम का दाई (आमंत्रक) बना कर जब यमन की तरफ भेजा तो उनको चलते वक्त यह नसीहत फ़रमाईः

> ''तुम लोगों को आसानी की राह बताना उनको मुश्किल में न डालना उन्हें खुश खबरी सुनाना, नफरत न दिलाना।''
>
> (सही बुखारी)

देखने में तो ये इरशादे नबवी दो दो लफ्ज़ के वाक्य हैं, मगर उनमें तरीक़ए तबलीग़ और असलूब दावत का एक दफ्तर बन्द है। दाई और मुबल्लिग़ (प्रचारक) को चाहिये कि जिस जमाअत की ओर से दावत दे उसमें आसान से आसान तरीके से दीन को पेश करे और शुरू में सख्ती न करे, उनको खुश खबरी सुनाये आमाल के अच्छे अज्र, रहमत व मग़फिरत इलाही की वुसअत (व्यापकता) का तज़किरा करे, उनको दीन का हौसला दिलाये।

इस हिदायत का हरगिज़ मतलब नहीं है कि अकीदे और फराएज़ में रियायेत की जाए, यह तो किसी हाल में भी जायज़ नहीं। बल्कि इस तालीम का मक़सद यह है कि तरीक़े कार में

सहूलत भी इख्तियार की जाए और नर्मी भी बरती जाए। फर्ज़ के अलावा दूसरे आमाल जो फर्ज़ किफ़ाया या मुसतहबात में से हों या जिनके सबब से दीन में फ़ितना पैदा होने का अन्देशा हो उनमें ज़्यादा सख्ती न की जाए। या जिन मामलों में हमारे फ़ुक़हा (इस्लामी कानून के ज्ञाता) व मुजतहदीन ने मुख्तलिफ़ राहें इख्तियार की हैं, उनमें से किसी एक ही राह इख्तियार करने में शिद्दत न की जाए, और जिस हद तक अल्लाह ताअला ने वुसअत पैदा कर रखी है, उसमें तंगी न की जाए।

इस तरह की मिसालें सीरत व सुन्नत में कसरत से मिलती हैं, चुनांचे अक़ीदे व फ़राएज़ में रियायेत करने की मुमानिअत कुरआन पाक की कई आयतों में है, कुफ्फारे मक्का इसलाम के अक़ीदों में कुछ नर्मी चाहते थे उस पर यह क़तई हुक्म नाज़िल हुआः

> ''कुफ्फार मक्का यह चाहतें हैं कि आप कुछ नर्मी कर दें तो वह भी नर्म पड़ जाऐं।''
>
> (अल क़लम :९)

(4) तदरीज :

इस उसूल का लाज़मी नतीजा यह है कि तबलीग़ में अहेम व गैर अहेम की तर्तीब मद्दे नज़र रहे। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने तबलीग़ शुरू की तो सबसे पहला ज़ोर तौहीद और रिसालत पर दिया। ला इलाहा इल्लल्लाह यानी कल्माये इस्लाम की दावत शुरू की। कुरैश पूछते हैं कि आप हमसे क्या चाहते हैं फ़रमाया केवल एक कलिमा (बात), अगर तुम इसको मान लोगे तो सारा अरब व गैर अरब तुम्हारा अधीन हो जायेगा। अल्लाह ताअला की

उलूहियत और रसूल की रिसालत, हक़ीक़त में वह बीज है, जिसके अन्दर से सारे अहकाम (आदेश) निकलते हैं। सबसे पहले इसी का बीज बोना चाहिये उसके बाद एहकाम का मर्हला आता है।

क़ुरआन पाक के नाज़िल होने का तरीक़ा खुद इस तरीक़े दावत की सही मिसाल है, हज़रत आयशा फरमाती हैं किः

> ''क़ुरआन पाक में पहले दिलों को नर्म करने वाली आयतें नाज़िल हुईं जिनमें जन्नत और दोज़ख का ज़िक्र है यानी जिन में खुशखबरी व डरावा है फिर जब लोग इस्लाम की ओर रागिब हुये तो हलाल व हराम की आयतें नाज़िल हुईं और अगर पहले यही उतरता कि शराब मत पियो तो कौन मानता।''

इस हदीस से मालूम हुआ कि क़ुरआन पाक के नाज़िल होने में भी यही हिकमते तबलीग़ मलहूज़ रहती है।

ताइफ़ का वफ्द (प्रतिनिधी मंडल) जब नबी सल्ल० के सामने हाज़िर हुआ तो उसने अपने इस्लाम लाने की यह शर्त पेश की कि उससे नमाज़ माफ़ कर दी जाए। हज़रत मोहम्मद सल्ल० ने फरमायाः

> ''जिस दीन में खुदा के सामने झुकना न हो वह किस काम का। फिर उन्होंन यह शर्त पेश की कि उनसे उश्र (गल्ले का दसवां हिस्सा) वसूल न किया जाए और न मुजाहिदीन की फ़ौज में उनको भर्ती किया जाए। आप सल्ल० ने यह दानों शर्ते क़ुबूल फरमा लीं। और इरशाद फ़रमाया कि जब यह मुसलमान हो जाऐगें तो

उश्र भी देंगे। और जिहाद में भी शरीक होंगे।''

(इमाम अहमद)

उल्माये हदीस लिखते हैं कि चूंकि नमाज़ फौरन वाजिब होती है और दिन में पाँच बार वाजिब होती हैं इसलिये उसमें नर्मी नहीं बरती गई और जिहाद की शिरकत चूंकि फर्ज़ किफाया है और किसी वक्ते खास पर फ़र्ज़ होती हैं और ज़कात व उश्र के वाजिब होने के लिये चूंकि एक साल की वुसअत थी और बाद को वह ताखीर से अदा हो सकती है, इसलिये इन दोनों बातों में नर्मी ज़ाहिर फरमाई।

इससे तबलीग़ के हकीमाना उसूल पर पूरी तरह रोशनी पड़ती है।

हज़रत मोहम्मद सल्ल० ने जब हज़रत मआज़ बिन जबल को यमन भेजा तो इरशाद फरमाया।

''तुम ऐसे लोगों में जा रहे हो जहाँ अहले किताब हैं। जब तुम वहाँ पहुंचो तो उनको सबसे पहले यह बताओ कि अल्लाह के सिवा कोई अल्लाह नहीं और यह कि मोहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं। जब वह यह मान लें तो उन्हें यह बताओ अल्लाह ताअला ने उनपर दिन में पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं, जब वह तुम्हारी यह बात भी मान लें तो उन्हें यह बताओ कि अल्लाह ताअला ने तुम पर ज़कात भी फ़र्ज़ की है, जो दौलतमन्दों से लेकर ग़रीबों को दी जाएगी, और जब वह उसको मानलें तो ज़कात में चुन चुन कर उनके अच्छे माल न लो और मज़लूम की बद्दुआ से बचना कि

उसके और अल्लाह के दरम्यान कोई और नहीं।''

(मुस्लिम)

(इस हदीस से भी दावत की हकीमाना तर्तीब का इज़हार होता है)

(5) अज़ खुद पेश क़दमी :

तबलीग़ व दावत के इन उसूलों में जो हज़रत मोहम्मद सल्ल० की सीरत में नुमायां मालूम होते हैं। एक पहल और इक़दाम (Initiative) है यानी हुज़ूर अनवर सल्ल० उसका इन्तज़ार नहीं फरमाते थे कि लोग आपकी ख़िदमत में खुद हाज़िर हों। बल्कि आप सल्ल० और आपके दाई, लोगों तक खुद पहुंचते और हक की दावत देते थे। यहाँ तक कि लोगों के घरों तक खुद पहुंच जाते थे, और कलिमये हक की दावत पेश फ़रमाते थे। आप मक्का मोअज़्ज़मा से सफ़र करके ताइफ़ तशरीफ़ ले गये और वहाँ अबद या लैल और दूसरे रइसों के घरों पर जाकर तबलीग़ का फ़र्ज़ अदा फ़रमाया। हज के मौसम में एक एक क़बीले के पास तशरीफ ले जाते और उनको हक़ का पैगाम पहुँचाते और सख्त और कड़वे जवाबों की परवाह न करते थे। आखिर इसी तलाश में यसरब के वह खुश किस्मत लोग मिले, जिन के हाथों ईमान व इस्लाम की दौलत मक्का मोअज़्ज़मा से मदीना मुनव्वरा मुन्तक़िल हुई।

सुलह हुदैबिया के बाद जब मुल्क में अमन व शान्ति और इत्मिनान नसीब हुआ तो इस्लाम के सफ़ीर, मिस्र, ईरान व हब्शा के बादशाहों और उम्मान व बहरीन, यमन और हुदूदे शाम के रइसों के पास इस्लाम का पैग़ाम ले कर पहुंचे और मुख्तलिफ सहाबा ने अरब के मुख्तलिफ गिरोहों और क़बीलों में जाकर

इस्लाम की तबलीग़ की। हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० मदीना मुनव्वरा गये। हज़रत अली रज़ि० और माअज़ बिन जबल ने यमन का रूख किया। यही हाल हर दौर के उलमाऐ हक़ और दाइयों (आमंत्रक) का रहा।

इससे मालुम हुआ कि दाई व मुबल्लिग़ (आमंत्रक एवं प्रचारक) का खुद फ़र्ज़ है कि वह लोगों तक पहुंचे और हक का पैग़ाम पहुंचाए। बाज़ लोगों को खानक़ाही लोगों के मौजूदा तर्ज़ से यह शुबह पैदा होता है कि इन हक़ परस्तों का हमेशा से यही तरीक़ा रहा है, हालांकि यह सरासर ग़लत है। उन बुर्ज़ुगों की ज़िन्दगियों और तज़करों को खोल कर पढ़ें तो मालूम होगा कि यह कहाँ के रहने वाले थे, फ़ैज़ कहां पाया और जो पाया उसको कहाँ-कहाँ बांटा और कहाँ जाकर दफन हुये और यह उस वक्त किया जब दुनिया रेलों, गाड़ियों और सफर के दूसरे साधनों से महरूम थी हज़रत मुईनउद्दीन चिश्ती सीसतान में पैदा हुये। चिशत (अफग़ानिस्तान) से दौलते इल्म पाई और राजपूतों के गढ़ में आकर हक़ की रोशनी फैलाई। बाबा फ़रीद शकरगन्ज रह० सिन्ध के किनारों से देहली तक और देहली से पंजाब तक आऐ गये और उनके मुरीदों और मुरीदों के मुरीदों में हज़रत निज़ामउद्दीन सुल्तानुलऔलिया और फिर उनके खलीफाओं के अहवाल उनके सफर के मुकामात और उनके मज़ारों की जगह देखिये कि वह कहाँ कहाँ पहुंचे हैं। कोई दक्कन में है कोई मालवा में है कोई बंगाल में है कोई सूबा जात मुतहैदा में है।

(6) नफीरः

इस्लामी दावत व तबलीग़ का एक बड़ा उसूल नफीर है

यानी दीन की तलब और तबलीग के लिये अपना वतन छोड़कर ऐसे मुकाम पर जाना जहां दीन हासिल करने तक फिर वहां से लौटना में आकर अपने वतन में आकर अपने कबीलों और हम वतनों को इस फेज़ से मुसतफ़ीद करना सूरह निसा की हस्ब ज़ैल आयत अगर्चे अपने शान नुज़ूल के लिहाज़ से जंग के मौके की है मगर अल्फाज़ के उमूम की बिना पर हर उस नफीर को शामिल है, जो किसी कारे खैर के लिये की जाए जैसा कि क़ाज़ी बैजावी ने भी अपनी तफ़सीर में इस तरफ इशारा किया हैः

> ''ऐ ईमान वालों! अपना बचाव करो और अलग अलग या जत्था बना कर घरों से निकलो।''
>
> (अल निसा :७१)

एक दूसरी आयत खास इसी मफ़हूम की सूरह तौबा में हैः

> ''यह तो नहीं हो सकता कि सारे मुसलमान घरों से निकल पड़ें तो फिर क्यों न हुआ कि हर गिरोह से कुछ लोग इस ग़र्ज़ के लिये घरों से निकलें कि वह दीन का इल्म हासिल करें और जब वह अपने घर लौट कर आऐं तो अपने लोगों को अल्लाह से डराऐं ताकि वह भी बुराइयों से बचने लगें।'' (अल तौबा :१२२)

रसूलुल्लाह सल्ल० के दौर में इसी तरह वफ़ूद (प्रतिनिधि मंडल) बना कर अलग अलग क़बीलों से लोग मदीना मुनव्वरा आते थे और हफ्ते दस दिन बाज़ ज़्यादा दिन रह कर दीन का इल्म और अमल की ट्रेनिगं हासिल करके अपने अपने घरों को लौटते थे और बक़िया लोगों को दीन से वाक़िफ करने का काम करते थे।

हज़रत मोहम्मद सल्ल० के अहदे मुबारक में मस्जिद नबवी के चबूतरे पर असहाबे सुफ्फा का हल्क़ा था जिनका कहीं घर न था। गुज़र बसर की सूरत यह थी यह लोग दिन को जंगल से लकड़ियां काट-काट कर लाते, बाज़ार में बेचते और रात को किसी मोअल्लिम के पास दीन का इल्म सीखते ज़रूरत के वक्त मुखतलिफ मुकामात पर प्रचारक बना कर भी भेजे जाते। ज़रूरी कामों के अलावा दीन की तालीम हुज़ूर अनवर सल्ल० की मोहब्बत से फेज़याबी और इबादत में लगाव उनके काम थे।

इस एहतमाम से मालूम हुआ कि एक ऐसे गिरोह का इन्तेज़ाम भी नज़्मे जमाअत में से है और यह भी मालूम हुआ कि यह गिरोह खास तर्तीब के मातहत पैदा होता था और सोहबते नबवी सल्ल० की बरकत से ज़ाहिरी व बातिनी खूबियों से मालामाल रहता और तबलीग़ व दावत के कामों को अन्जाम देता था।

तालीम का तरीक़ा ज़्यादातर फ़ैज़ेमोहब्बत, ज़बानी तालीम, अहकाम व मसाएल का ज़िक्र व तज़किरा और एक दूसरे से पूछना, सीखना और बताना था। उनकी रातें इबादतों में गुज़रती थीं और दिन कारोबारे दीन में गुज़रता था।

तबलीग़ की अहमियत :

हकीमाना तबलीग़ व दावत, भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना इस्लाम की रीढ़ की हडडी है। इस पर इस्लाम की बुनियाद, इस्लाम की कूव्वत, इस्लाम की वुसअत और इस्लाम की कामयाबी निर्भर है और आज सब ज़मानों से बढ़ कर उसकी ज़रूरत है, ग़ैर मुस्लिमों को मुसलमान बनाने से ज़्यादा अहम काम

मुसलमानों को मुसलमान, नाम के मुसलमानों को काम का मुसलमान और क़ौमी मुसलमानों को दीनी मुसलमान बनाना है। हक़ तो यह है कि आज मुसलमानों की हालत देख कर क़ुरआन पाक की यह प्रकार पूरे ज़ोर शोर से बुलन्द करने की ज़रूरत हैः

''ऐ वह लोगों जो ईमान लाए हों हकीक़त में ईमान ले आओ।''

(अल निसा ४:१३६)

शहर-शहर गाँव-गाँव घूम कर मुसलमानों को मुसलमान बनाने का काम किया जाए और इस राह में वह मेहनत, वह मशक्कत, वह हिम्मत और क़ूव्वत सर्फ की जाए, जो दुनियादार लोग दुनिया की शान व शौकत और हुसूले माल व ताक़त में सर्फ कर रहे हैं, जिस में हुसूले मक़सद की खातिर हर क़ीमती और महबूब चीज़ को क़ुरबान करने और हर रूकावट को बीच से हटाने के लिये गैर मामूली ताक़त पैदा होती है। कशिश से कोशिश से जान व माल ओर हर राह से इसमें कदम आगे बढ़ाया जाए और हुसूल मक़सद की खातिर वह जुनून की कैफियत अपने अन्दर पैदा की जाए जिसके बग़ैर दीन व दुनिया का न कोई काम हुआ है और न होगा।